❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

प्रबुधे न पुनस्कृधिः।।

यजु. 4/14

हे संकल्पशक्ति! हमें फिर से प्रबुद्ध कर जगा।

O Will power ! Do awaken us again from stumber.

वर्ष 40, अंक 36 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 जुलाई, 2017 से रविवार 9 जुलाई, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सम्पादकीय

गौत्र क्या होता है रणधीरों का ?

निःसंदेह देश के सर्वोच्च पद के लिए रामनाथ कोविंद एक अच्छे, योग्य विनम्र और मृदु भाषी उम्मीदवार हैं। कोई चाहकर भी उनकी ईमानदारी और निष्ठा पर सवाल नहीं उठा सकता। वे किसी विवाद में नहीं फंसे, उनके राजनीतिक जीवन में कोई दाग नहीं लगा। लेकिन विवाद यह है कि जैसे ही रामनाथ कोविंद का नाम राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के बतौर घोषित हुआ। सबसे पहले लोगों ने गूगल पर उनकी जाति सर्च की। ठीक उसी तरह जैसे ओलम्पिक पदक जीतने वाली भारत की तीन बेटियों की जाति लोगों ने गूगल पर खंगाल डाली थी।

शायद राजनीति के अखाड़ों से लेकर मीडिया हाउस तक किसी ने यह जानने कि कोशिश की हो कि रामनाथ कोविंद कौन हैं। उन्होंने अपनी जिंदगी में किस बूते क्या-क्या हासिल किया। किन संघर्षों से गुजरकर उन्होंने कामयाबी की सीढ़ियां

.......महाकवि दिनकर की कविता की एक पंक्ति है कि 'मूल जानना बड़ा कठिन है नदियों का, वीरों का, धनुष छोड़कर और गोत्र क्या होता है रणधीरों का? पाते हैं सम्मान तपोबल से भूतल पर शूर, ''जाति-जाति'' का शोर मचाते केवल कायर, क्रूर!' ....

क्या ''सत्तर बरस बिताकर सीखी लोकतंत्र ने बात, महामहिम में गुण मत ढूंढो, पूछो केवल जात?'' राजनीति से लेकर आम जिंदगी तक में जातिवादी मानसिकता कितने गहरे पैठी है। आप इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि

– शेष पृष्ठ 2 पर

वेटिकन के सफेद कपड़ों का सच!

गुड फ्राइडे 6 मार्च साल 2010 था। सुबह-सुबह जर्मनी के सारे गिरजाघरों में चर्च पदाधिकारियों के हाथों यौन शोषण का शिकार बने लोगों के लिए विशेष प्रार्थना सभाएँ आयोजित की गई थीं। उसी दिन रोम के अखबारों में यह खबर पहले पन्ने की सुर्खियों में छपी थी और कुछ अखबारों ने तो इसे वैटिकन सामूहिक नरसंहार तक का नाम दिया था। क्योंकि इससे चार दिन पहले ही फ्राइडे के अवसर पर अपने संदेश में आर्चबिशप रॉबर्ट सोलिच ने कहा था कि चर्च ने संभवतः अपना नाम खराब होने के डर से पादरियों द्वारा मासूम यौन उत्पीड़ितों की मदद नहीं की। हम बीते काल की गलतियों के लिए कैथोलिक चर्च हमेशा शर्मसार रहेंगे।

.... कहीं मिशनरियों के जरिये बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन को लेकर तो कहीं बच्चों का यौन शोषण को लेकर कैथोलिक चर्च अक्सर आलोचना का केंद्र रहा है। लोगों के मुताबिक इसके लिए इनके चरित्र का दोहरापन जिम्मेदार है। इसी कारण यूरोप के लोग धीरे-धीरे चर्च से निकल रहे है पर दुखद बात यह कि जब यूरोप के लोग चर्च छोड़कर बाहर निकल रहे उसी समय भारत जैसे देश में बड़ी संख्या में लोग चर्च में घुस रहे हैं और खुद को राम कृष्ण की संतान की बजाय जीसस का पुत्र समझ रहे हैं।........

आर्चबिशप के इस ब्यान के बाद समूचे यूरोप में पादरियों के विरुद्ध लोगों का कुछ गुस्सा तो कम हुआ पर चर्चों के प्रति लोगों की आस्था में भारी गिरावट

– शेष पृष्ठ 4 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के संयुक्त तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
6-7-8 अक्तूबर 2017
म्यांमा
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा

6-7-8 अक्तूबर, 2017 (शुक्र-शनि-रवि)

श्री अम्बिका मन्दिर परिसर, मांडले (म्यांमा-बर्मा)

समस्त विश्व के आर्यजनों से बर्मा पहुंचने का आह्वान : प्रस्थान हेतु अभी से करें तैयारियां आरम्भ

देश-विदेश की समस्त आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य शिक्षण संस्थानों एवं आर्य प्रतिष्ठानों की सूचनार्थ है कि विदेशों में आयोजित होने वाले प्रत्येक सम्मेलन की तरह इस वर्ष म्यांमा में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए यात्रा व्यवस्थाएं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से की जा रही हैं। बर्मा-म्यांमा में आर्यसमाज के 122 वर्षों के इतिहास में पहली बार यह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

यात्रा कार्यक्रम पृष्ठ 2 पर

संगठन की सुदृढ़ता एवं विस्तार सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण विषयों पर दिल्ली सभा के अन्तर्गत दिल्ली स्थित आर्यसमाजों की गोष्ठियों का दौर जारी

आप सभी को विदित ही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली स्थित आर्यसमाजों की क्षेत्रिय गोष्ठियों का अआयोजन किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत पश्चिम दिल्ली की दो महत्त्वपूर्ण गोष्ठियां सम्पन्न हो चुकी हैं। आपसे निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के सभी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों तथा सक्रिय महिला पदाधिकारियों को क्षेत्रानुसार आगामी गोष्ठियों में साथ लाएं ताकि चर्चाएं तथा सूचनाएं समस्त आर्यजनता तक सरलता से पहुँचाई जा सके और गोष्ठी के उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके। आपसे यह भी निवेदन है कि यदि आप किसी कारणवश अपने क्षेत्र की गोष्ठी में न पहुंच पाएं, तो अन्य क्षेत्र की गोष्ठी में अवश्य ही पहुंचने का प्रयास करें। तिथियों में परिवर्तन सम्भव है। गोष्ठी के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए सुन्दर प्रीतिभोज की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी। – ***महामन्त्री***

उत्तरी दिल्ली गोष्ठी	पूर्वी दिल्ली गोष्ठी	दक्षिण दिल्ली गोष्ठी
आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स, दिल्ली **रविवार : 9 जुलाई, 2017** -: व्यवस्थापक :- श्री योगेश आर्य जी	आर्यसमाज सूरजमल विहार **रविवार : 16 जुलाई, 2017** -: व्यवस्थापक :- श्री अशोक कुमार गुप्ता जी	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-2 **रविवार : 23 जुलाई, 2017** -: व्यवस्थापक :- श्री सहदेव नांगिया जी

गोष्ठी समय एवं कार्यक्रम :	चाय/जलपान	प्रथम सत्र	चाय/नाश्ता :	द्वितीय सत्र :	भोजन :
	दोपहर 2:30 बजे	सायं 3 से 5 बजे	सायं 5 बजे	सायं 5:15 से 7:15 बजे	सायं 7:30 बजे

वेद-स्वाध्याय

हम ज्ञान का प्रसार करें

त्रातारो देवा अधि वोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः।
वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम।। ऋग्वेद 8/48/14
ऋषिः **प्रगाथः काण्वः।।** देवता – **सोमः।।** छन्दः **विराट्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ – **त्रातारः देवाः** = हे रक्षक देवो! **नः अधिवोचत** = हमसे बात करो, हमें बताओ। **नः निद्रा मा ईशत** = हम कभी निद्रा, आलस्य के वशीभूत न हों और **मा उत जल्पिः** = और न ही बकवास, व्यर्थ बोलने की इच्छा हमें दबाये। **वयं विश्वह सोमस्य प्रियासः** = हम सदा सोम के प्यारे होते हुए और **सुवीरासः** = श्रेष्ठ वीर होते हुए **विदथं आवदेम**= ज्ञान को फैलाते रहें।

विनय – हे प्राकृतिक देवो! तुम हमसे बात करो। तुम हमसे इतने स्वाभाविक और निकट सम्बन्ध में हो जाओ कि हम तुम्हारे अभिप्राय को सदा समझते रहें। हे रक्षक देवो! तुम तो हमारे इतने आत्मीय हो कि यद्यपि हम अप्राकृतिक जीवन बिताते हुए अपनी हानि करने में कभी कुछ कसर नहीं छोड़ते हैं तो भी तुम्हारी प्रवृत्ति सदा, अन्त तक हमारी रक्षा करने की ही रहती है। हमें हानि तभी पहुंचती है जब हम अन्त तक तुम्हारी बात नहीं सुनते, तुम्हारे बार-बार सावधान करने पर भी हम तुम्हारी चेतावन को नहीं सुनते और तुम्हारी ज़ोरदार आवाज भी हमें इसीलिए सुनाई नहीं देती क्योंकि हम तुमसे समस्वर (In tune) नहीं रहते, तुम्हारे यन्त्र से अपना यन्त्र मिलाये नहीं रखते, वस्तुतः इस समता में ही सब-कुछ है। हम या तो तमोगुण में पड़े रहते हैं या उससे उठते हैं तो रजोगुण हमें अपने चक्र पर चढ़ा लेता है। इन दोनों की समता (सत्त्व गुण) में हम टिक नहीं सकते। हममें यह सामर्थ्य नहीं है कि हम अपनी निद्रा को या अपनी बोलने आदि की क्रिया को अपने काबू में रख सकें। जब 'तम' का वेग आता है तो हम आलस्य में दब जाते हैं ओर जब 'रज' का वेग आता है तो हम बोलते चले जाते हैं। इस असमता को, हे देवो! अब हमसे हटा दो। अब 'निद्रा' और 'जल्पि' हम पर अपन प्रभुत्व न कर सके। हम अब जब चाहें तभी आराम करें, अपनी निद्रा लेवें और अपने भाषण आदि कर्म पर अपना पूरा संयम रख सकें। इस समता, संयम रख सकने में ही श्रेष्ठ वीरता है, सुवीरता है। यदि हम ऐसे हो जाएंगे तो, हे देवो! तुम सब देवों के देव उस सोमदेव के भी हम प्यारे हो जाएंगे। अब हमारी यही इच्छा है कि हम उस सोम प्रभु के प्यारे होते हुए और समता में रहने वाले ऐसे 'सुवीर' होते हुए ही अपना जीवन बिताएं। ऐसे तुम्हारे भाई बनकर तुमसे जो कुछ ज्ञान पाएं उसे अपने जीवन द्वारा फैलाते रहें-तुमसे जो कुछ सुनें उसे औरों को भी सुनाते रहें। इसलिए, हे देवो! तुम अब हमें सुनाओ, हमसे बात करो।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

गौत्र क्या होता है.....

चढ़ीं। जानना चाहा तो बस इतना है कि वे किस जाति से आते हैं। ये कोई इत्तेफाक की बात नहीं है कि लोग सबसे ज्यादा उनकी जाति के बारे में जानना चाहते हैं। हमारी महान राजनीतिक परम्परा ने जातिवादी मानसिकता की जड़ें इतनी गहरी जमा दी हैं कि हम इसके आगे कुछ सोच ही नहीं पाते।

राष्ट्रपति का पद देश का सर्वोच्च पद होता है। इसके लिए रामनाथ कोविंद जैसे इन्सान का चुना जाना एक गौरव की बात है। पर दुखद बात यह है महामहिम राष्ट्रपति देश का प्रथम नागरिक होता है और प्रथम नागरिक ही अपनी योग्यता के बजाय अपनी जाति से जाना जाये तो हम किस मुहं से जातिवाद मुक्त भारत की बात कर सकते हैं। अपनी सीमित योग्यता के चलते मैं बता दूँ कि संविधान कहता है राष्ट्रपति चुनाव में राजनैतिक दलों की भूमिका का कोई उल्लेख नहीं है। देश का राष्ट्रपति बनने के लिए किसी जाति धर्म का भी कोई मानक स्थापित नहीं है। देश का कोई भी नागरिक जिसकी आयु 35 वर्ष से अधिक हो, लोकसभा का सदस्य बनने की योग्यता प्राप्त हो और केंद्र और राज्य की किसी स्थानीय प्राधिकरण में किसी लाभ के पद पर न बैठा हो। वह ही देश का राष्ट्रपति बन सकता है।

अक्सर जब राष्ट्रपति चुनाव नजदीक आते हैं तो हमेशा सुनने को मिलता है कि राष्ट्रपति किस दल का होगा, उसकी जाति, धर्म, क्षेत्र आदि पर सवाल खड़े होना शुरू हो जाते हैं। क्या देश का राष्ट्रपति किसी दल से जुड़ा होना जरूरी है? क्यों नहीं एक ऐसा मार्ग खोजा जाये कि देश का प्रथम नागरिक किसी दल जाति पंथ के बजाय इस देश की आत्मा से जुड़ा हो। दूसरी बात जो राजनीति पहले प्रतीकात्मक तरीके से जातीय बंधनों को तोड़ने की बातें करती है, वह उसी के सहारे जातिवादी पहचान पुख्ता करने की तमाम कोशिशें भी करती है। उसी का नतीजा है कि दलितों के उत्थान के नाम पर इसकी जातीय राजनीति सिर्फ एकाध चेहरों को आगे बढ़ाकर दलितों को भ्रमित करने की राजनीति करती है और इसमें सारी पार्टियां भागीदार हैं।

संविधान विशेषज्ञ सुभाष कश्यप कहते है कि जरूरी नहीं है कि राष्ट्रपति पद के लिए कोई राजनीतिक व्यक्ति ही चुना जाये बल्कि अच्छा तब हो जब देश के सर्वोच्च पद के लिए किसी राजनैतिक दल से जुड़ा व्यक्ति न हो जैसे पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम किसी राजनैतिक दल से कोई सम्बन्ध न होने के बावजूद भी देश में राष्ट्रपति के रूप में अपना कार्यकाल अच्छे से निर्वहन किया। इस कारण राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति इन दोनों पदों के लिए राजनीति से बाहर का व्यक्ति हो तो ज्यादा बेहतर रहे। इन सबके बीच असल सवाल प्रतिनिधित्व का है। मूल बात यह है कि अगर किसी जाति विशेष के हितों की बात की जाती है तो उन्हें किस स्तर और कितनी मात्रा में सत्ता की हिस्सेदारी मिलती है। जातीय गणित बिठाने की कोशिशों के बीच सरकार यह तक भूल जाती है कि देश के संवैधानिक पदों की गरिमा को बचाए रखने के लिए योग्यता का मानक शीर्ष पर रखना चाहिए न जातिगत गणित। जब राजनीति योग्य उम्मीदवारों का समानता और योग्यता के आधार पर चुनाव करेगी निःसंदेह तभी सामाजिक समरसता से भरा समाज खड़ा होगा।

सवाल किसी के पक्ष या विरोध का नहीं है बल्कि सवाल उपजा है 70 वर्ष की राजनीति, देश की शिक्षा और सामाजिक सोच की संकुचित विचारधारा पर, सत्तारूढ़ दल ने जैसे ही रामनाथ कोविंद का नाम आगे किया तो विपक्ष ने भी मीरा कुमार का नाम आगे कर यह दिखाने का प्रयास किया हम भी दलितवादी हैं। सत्तारूढ़ के दलित चेहरे के सामने हम अपना दलित चेहरा आगे लायेंगे। कुल मिलाकर सवाल फिर से यही उपजते हैं कि देश के महामहिम पद के लिए क्या जाति ही असल मसला है? दलित जाति के हैं इसलिए राष्ट्रपति बनने जा रहे हैं? दलित जाति के हैं इसलिए विपक्ष का धड़ा विरोध तक नहीं कर पा रहा? दलित जाति के हैं इसलिए उनके मुकाबले में विपक्ष भी दलित उम्मीदवार लेकर आया है? यदि ऐसा है तो क्या एक दलित को पद देने से देश के समस्त दलित समुदाय का भला होगा? क्या कोई भी सरकार कुछ ऐसा नहीं कर सकती कि यह दलितवाद का शोर थामकर इसमें राजनैतिक रोटी न सेंककर इस समुदाय की शिक्षा, रोजगार, सामाजिक समानता पर जोर देकर इन्हें इस दलितवाद से मुक्ति दिला सके? महाकवि दिनकर की कविता की एक पंक्ति है कि मूल जानना बड़ा कठिन है नदियों का, वीरों का, धनुष छोड़कर और गोत्र क्या होता है रणधीरों का? पाते हैं सम्मान तपोबल से भूतल पर शूर, ''जाति-जाति'' का शोर मचाते केवल कायर, क्रूर! – ***सम्पादक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा

अनुमानित यात्रा कार्यक्रम इस प्रकार है

9 रातें-10 दिन, म्यांमार, रंगून, इनले लेक, मांडले, पहाड़ी स्थान मेम्यो के आकर्षक स्थानों का भ्रमण। सभी यात्रा, वीजा, हवाई टिकट, बस व्यवस्था, भोजन, थ्री स्टार होटल आवास। मेडिकल बीमा 75 वर्ष तक की आयु तक **कुल अनुमानित व्यय 75000/- रुपये** है। (75 वर्ष से अधिक आयु के लिए मेडिकल बीमा पर अतिरिक्त व्यय देय होगा) जो महानुभाव इस सुविधा का लाभ उठाना चाहें वे तुरन्त अपना मूल पासपोर्ट, दो पासपोर्ट फोटो एवं **"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम रु. **15000/-** का बैंक ड्राफ्ट/चैक **"15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001"** के पते पर भेज देवें।

नोट : ★ उपरोक्त यात्रा विवरण एवं व्यय राशि अनुमानित है। ★ विस्तृत कार्यक्रम तैयार होने पर 10% राशि घट-बढ़ सकती है। ★ 10% से अधिक व्यय राशि बढ़ने पर जो श्रद्धालुजन महासम्मेलन में जाने में असमर्थता प्रकट करेंगे उनके द्वारा अग्रिम भेजी गई राशि को वापस लौटा दिया जाएगा। ★ जो यात्रीगण कोलकाता से यात्रा करेंगे उनके लिए व्यय राशि 7500/- रुपये कम रहेगी।

व्यवस्थापक समिति श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री शिव कुमार मदान।

सम्पर्क करें – श्री एस. पी. सिंह (मो. 9540040324)

विस्तृत जानकारी एवं यात्रा विवरण आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा

सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	आर्य अनिल तनेजा
(प्रधान)	(सभा मन्त्री एवं संयोजक)	(कोषाध्यक्ष)

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ऋ

गुरुकुल पौंधा में अयोजित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्वाध्याय शिविर में डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के व्याख्यानों पर आधारित लेख

सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन सत्यासत्य का ठीक-ठीक निर्णय कराता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 29 मई से 1 जून 2017 के मध्य गुरुकुल पौंधा, देहरादून में डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

शिविराध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्वामी दयानन्द जी का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। आर्यो का जीवन श्रेष्ठ कैसे बने इसके लिए ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित स्वामी दयानन्द जी ने संस्कार विधि और सत्यार्थ प्रकाश आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की है। डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने संस्कारों के महत्व के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा, बड़े व कठोर पत्थर पर हथौड़े की बार-बार चोट करने पर ही अन्त में वह टूटता है परन्तु प्रत्येक चोट के साथ वह कुछ कमजोर होता जाता है। इसी प्रकार जीवन को संस्कारित करने में अच्छे संस्कारों का बार-बार आचरण व व्यवहार करना होता है। मनुष्य का जब जन्म होताौ तो जीवात्मा के साथ अच्छे व बुरे संस्कार आते हैं। हमें बुरी आदतों को छोड़ने का प्रयत्न करना चाहिए। महर्षि दयानन्द के शब्दों मं वह सन्तान धन्य है जिसके माता-पिता धार्मिक हों की चर्चा भी आचाग्र जी ने की और इसके महत्व पर प्रकाश डाला। आपने मनुष्यों में सुशीलता के गुणों की भी चर्चा की और कहा कि हम सबको सुशीलता को धारण करना चाहिये। ऋषि दयानन्द जी के वेद भाष्य में कार्य सहित इस ग्रन्थ की विषय वस्तु व उसकी महत्ता पर भी डॉ. सोमदेव जी ने प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद सभी चार वेदों की एक ही भूमिका है। भूमिका ग्रन्थ की रचना का आरम्भ ऋषि दयानन्द जी ने अयोध्या में 20 अगस्त सन् 1876 को किया था और तीन महीने में ग्रन्थ लिखकर तैयार हो गया था।

.....वेदों में ज्ञान, विज्ञान सहित खेती, व्यापार, राज व्यवस्था, शिक्षा, उपासना, विमान, तारा विद्या आदि अनेकानेक विषय एवं सभी विद्यायें हैं। आपने बताया कि ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में 35 विषयों पर प्रमाणिक जानकारी दी है। आचार्य सोमदेव शास्त्री ने मुम्बई के शिवकर बापू तलपड़े जी की चर्चा की और बताया कि वह ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के अनुयायी थे।.....

डॉ. सोमदेव जी ने बताया कि महाभारत काल के बाद वेदानुयायी विद्वानों को यह भ्रम हो गया था कि वेदों का उपयोग केवल यज्ञ के लिए ही होता है। उन्होंनेकहा कि यह उनकी मिथ्या मान्यता थी। इस भ्रम व मिथक को ऋषि दयानन्द ने तोड़ा । उन्होंने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदों में ज्ञान, विज्ञान सहित खेती, व्यापार, राज व्यवस्था, शिक्षा, उपासना, विमान, तारा विद्या आदि अनेकानेक विषय एवं सभी विद्यायें हैं। आपने बताया कि ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में 35 विषयों पर प्रमाणिक जानकारी दी है। आचार्य सोमदेव शास्त्री ने मुम्बई के शिवकर बापू तलपड़े जी की चर्चा की और बताया कि वह ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के अनुयायी थे। उन्होंने सन् 1895 में वायुयान बनाया था। श्री तलपड़े आर्य समाज काकड़वाड़ी के सदस्य व पदाधिकारी थे। उन्होंने जो विमान बनाया था उसका नाम ''मरुतसखा'' रखा था। इस विमान को उन्होंने मुम्बई के चौपाटी इलाके में बड़ोदा नरेश श्री गायकवाड़, पूना के न्यायालय के न्यायाधीश श्री महादेव गोविन्द राना डे सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों एवं लोगों के भारी समूह की उपस्थिति में उड़ाया था जो काफी ऊंचाई तक गया था और 17 मिनट तक वायु व आकाश में रहा था। उन दिनों देशर के लोकप्रिय नेता बाल गंगाधर तिलक ने अपने पत्र 'केसरी' में तलपड़े जी के विश्व में सर्व प्रथम विमान बनाने व उसे सफलतापूर्वक उड़ाने के कार्य की प्रशंसा की थी। श्री तलपड़े जी को इस वैज्ञानिक खोज व विमान निर्माण के लिए 'विद्या प्रदीप प्रकाश' की उपाधि मिली थी और कोल्हापुर के शंकराचार्य जी ने उनका इस कार्य के लिए सम्मान भी किया था। श्री तलपड़े जी ने इस सफलता के बाद विमान को नया, प्रभावशाली, उन्नत व विकसित रूप देने के लिए दस हजार रुपयों की एक अपील की थी। श्री तलपड़े की सफलता से देश की अंग्रेजी सरकार उनकी विरोधी हो गई थी। उन्होंने तलपड़े की किसी प्रकार की सहायता न करने के लिए बड़ौदा नरेश श्री गायकवाड़ जी को बुरे परिणामों की धमकी दी थी। महादेव गोविन्द राना डे जी को भी नौकरी से निकालने की धमकी दी गई थी। श्री तलपड़े जी ने सहायता न मिलने पर एक पुस्तक प्रकाशित कर धन संग्रह करने की योजना बनाई थी परन्तु यथेष्ट धन प्राप्त नहीं हुआ। इससे वह मानसिक तनाव का शिकार हो गये। इन्हीं कारणों से उनकी विदुषी ज्ञानवी पत्नी का देहान्त हो गया। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में विमान से सम्बन्धित अपनी सारी जानकारी व सामान को उनसे रैली ब्रदर्स, मुम्बई ने खरीद लिया। कुछ ही समय बाद श्री तलपड़े जी की मृत्यु हो गई थी। अनुमान है कि यह जानकारी व सामान इंग्लैण्ड पहुंच गया और वहां उसका उपयोग किया गया। आचार्य सोमदेव जी ने आगे कहा कि सन् 1903 में राइट बन्धुओं ने पहला विमान बनाया। यह विमान कुछ सेकेण्ड्स तक ही उड़ा था।

डॉ. सोमदेव शास्त्री ने बताया कि वेदों में वर्णित अनेक विद्याओं का संक्षिप्त वर्णन महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में किया है। सत्यार्थ प्रकाश की चर्चा कर विद्वान आचार्य ने बताया कि सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन सत्यासत्य की ठीक-ठीक निर्णय कराता है। स्वामी शंकराचार्य का उल्लेख कर उन्होंने बताया कि उनके तीन प्रमुख ग्रन्थो वेदान्तदर्शन, उपनिषद् एवं गीता पर उनका अद्वैतवादी भाष्य है। इन्हें प्रस्थानत्रयी नाम दिया गया है। इसी प्रकार से महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं संस्कारविधि को बहुत त्रयी कहते हैं। महाराज मनु के अनुसार भी वेद ज्ञान के भण्डार हैं। उन्होंने बताया कि मनु के अनुसार संसार में सब वस्तुओं के नाम वेद के शब्दों को लेकर ही प्रसिद्ध हुए हैं। आचार्य जी ने उपासना की चर्चा करते हुए आगे कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेद, योगदर्शन, उपनिषदों के आधार पर उपासना को प्रस्तुत किया है। आचार्य जी ने बताया कि वेदोत्पत्ति के बाद ऋषियों ने वेद के विषयों को सरल व सुबोध बनाने के लिए उपवेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, वेदांग एवं उपांग, अरण्यक, उपनिषद् आदि ग्रन्थों की रचना की। आचार्य जी ने बताया कि जिस ग्रन्थ में परमात्मा व ब्रह्म की व्याख्या हो उसे ब्राह्मण कहते हैं। उपासना में स्वाध्याय का महत्त्व बताते हुए आचार्य जी ने कहा कि स्वाध्याय ब्रह्मयज्ञ कहलाता है। जो मनुष्य व विद्वान ब्रह्म वेद की व्याख्या करता है, वह ब्राह्मण कहलाता है। ऋग्वेद का ऐतरेय, यजुर्वेद का शतपथ, सामवेद का साम व ताण्डय तथा अथर्ववेद का ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण नाम से प्रसिद्ध है। आचार्य जी ने वेदों के अर्थो को स्पष्ट करने में कथानकों के महत्त्व का भी उल्लेख किया। 6 वेदांग शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष और कल्प की चर्चा सहित वेदार्थ की यौगिक, योगारुढ़ और रुढ़ि प्रक्रियाओं की भी आपने चर्चा की। संस्कृत शब्दों में धातुओं के स्वरूप व उनके प्रयोग की चर्चा पर भी आपने उदाहरणों सहित प्रकाश डाला। वेदों के मन्त्रों के अर्थो की आध्यात्मिक, आधिदैविक व आधिभौतिक प्रक्रियाओं की चर्चा व उसके महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। मत्रों के विनियोग के स्वरूप व महत्त्व को भी आपने रेखांकित किया। आचार्य जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने मंत्रों का विनियोग उनके अर्थ के अनुसार संध्या, यज्ञ आदि कार्यो व संस्कारों में किया और वेद मंत्र में निहित विचार व अर्थ के अनुसार ही क्रिया करने का विधान किया। स्वर्ग, नरक, देवता आदि के यथार्थस्वरूप सहित अनेक भ्रान्तियों का निवारण भी विद्वान वक्ता ने शिविर के प्रथम दिन के प्रथम सत्र में किया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के समय में यह भ्रांति प्रचलित थी कि वेदों का अशुद्ध उच्चारण होने पर मंत्र का उच्चारण करने वाली की मृत्यु हो जाती है। इस कारण लोगों ने मंत्रों का उच्चारण करना ही छोड़ दिया था। महर्षि दयानन्द ने बताया कि मंत्रोच्चार से अशुद्ध उच्चारण करने वालों की मृत्यु नहीं होती अपितु मंत्र के अशुद्ध उच्चारण से उसका अभिप्राय मर जाता है। इसे उदाहरणों से भी शिविरार्थियों को समझाया गया। शान्ति पाठ के साथ शिविर का सत्रावसान हुआ।

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

बोध कथा

कल्प वृक्ष

नारद जी एक बार नगर में आये। एक पुराना मित्र उन्हें मिला, संसार की विपत्तियों में फंसा हुआ। नारद जी ने कहा-''यहां संकट में पड़े हुए हो। आओ, तुम्हें स्वर्ग ले चलूं।''

उसने कहा-''और क्या चाहिये।'' दोनों पहुंच गए स्वर्ग में। वहां सुन्दर पत्तों वाला, सुन्दर छाया वाला कल्पवृख खड़ा था। नारद जी ने कहा-''तुम इस वृक्ष के नीचे बैठो। मैं अभी अन्दर से मिलकर आता हूं।''

नारद जी चले गये तो उस आदमी ने इधर-उधर देखा। सुन्दर वृक्ष, सुन्दर छाया, धीमी-धीमी शीतल वायु। उसने सोचा-कितना उत्तम स्थान है! यदि एक आराम-कुर्सी होती तो मैं उस पर बैठ जाता।

वह था कल्पवृक्ष। उसके नीचे खड़े होकर जो इच्छा की जाय, वह पूरी होती है। उसी समय पता नहीं कहां से एक आराम-कुर्सी आ गई। वह उस पर बैठ गया। बैठकर उसने सोचा-एक पलंग होता तो थोड़ी देर के लिए मैं लेट जाता। विचार करने की देर थी कि पलंग भी आ गया। वह लेट गया। लेटते ही सोचने लगा-घर होता तो पत्नी से कहता कि मेरी टांगे दबा दे, मेरा सिर मल दे। सोचते ही बहुत सी अप्सरायें वहां उपस्थित हो गईं। कोई पांव दबाने लगी, कोई गीत गाने लगी, कोई नाचने लगी। उस आदमी ने उन सबको देखा तो सोचा-यदि इन सब स्त्रियों के साथ मेरी पत्नी मुझे देख ले तो झाड़ू लेकर मेरी पिटाई कर डाले। सोचना अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि हाथ में झाड़ू लेकर पत्नी आ गई। धड़ा-धड़ उसे मारने लगी। अप्सरायें भाग गईं। वह पलंग से उठकर दौड़ा। आगे- आगे वह, पीछे-पीछे झाड़ू को लिये हुए पत्नी। नारद जी ने लौटते हुए उसे दूर से देखा; पुकारकर कहा-''मूर्ख! सोचना ही था तो कोई अच्छी बात सोचते। यह क्या सोच बैठे तुम ? यह तो कल्पवृक्ष है।''

सो भाई मेरे, प्राणायाम के कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर अच्छी बातें सोचना, बुरी बातें नहीं सोचना। **साभार : बोध कथाएं**

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

लाहौर के पं. भानुदत्त- उनसे स्वामी दयानन्द जी ने सुधार कार्य में सहयोग मांगा

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

.....सन् 1881 के जनवरी मास में मथुरा के सेठ नारायण दास के आर्थिक सहयोग से जब कलकत्ता में यूनिवर्सिटी के सेनेट हॉल में स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों का विरोध करने के लिए 'आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा' का आयोजन हुआ और बिना स्वामीजी का पक्ष सुने उपस्थित पण्डितों ने अपना एकांगी मत सुनाया तथा घोषित किया -''ब्राह्मण भाग की संहिता के तुल्य मान्य है। पौराणिक देवताओं की पूजा, मृतक श्राद्ध तथा गंगादि तीर्थ सेवक वेदानुमोदित हैं, अग्निमीडे आदि मंत्रों में आया 'अग्नि', केवल भौतिक अग्नि का प्रतीक है तथा यज्ञ का प्रयोजन मात्र स्वर्ग प्राप्ति है, जलवायु का शुद्धिकरण नहीं। भारत के समाचार पत्रों ने इस घटना को विस्तार से चर्चा का विषय बनाया।....

अप्रैल 1877 की बात है। जब ऋषि दयानन्द लाहौर पहुंचे और धर्म जागरण का कार्य आरम्भ किया तो उन्हें पता लगा कि यहां के पं. भानुदत्त ने सत् सभा का गठन किया है जो निराकार परमात्मा की पूजा का प्रचार करती है तथा मूर्तिपूजा को अच्छा नहीं समझती। ऋषि ने पं. भानुदत्त से सम्पर्क साधा और उन्हें अपने विचारों का जानकर अपने कार्य में सहायक बनने के लिए कहा। जब कट्टर पुराणपन्थी पण्डितों को इस बात का पता लगा तो उन्होंने भानुदत्त को जा घेरा और उन पर दयानन्द का सहायक होने का आरोप लगाकर बहुत कुछ बुरा भला कहा। पं. भानुदत्त में इतना आत्मिक बल कहां था कि वे प्रचण्ड सुधारक दयानन्द का साथ देते। अत: तुरन्त फिसल गये और उन पौराणिकों को आश्वस्त कर दिया कि वे उनके जैसे ही विचार रखते हैं तथा यदि दयानन्द का विरोध करने लगे। बात आई तो वे पौराणिकों का ही साथ देंगे। इस पर जब उनको मित्रों ने कहा कि पहले तो वे मूर्तिपूजा के विरोधी थे, अब दयानन्द के निराकारवाद की खिलाफत क्यों करते हैं, तो उन पण्डितजी ने कहा-''पं. दयानन्द सरस्वती चाहते तो थे कि जाति हित के कार्यों में उनका सहायक बनूं तथा उनके साथ-साथ लोगों को उपदेश दूं परन्तु मैं कुटुम्ब के मोह में कुछ ऐसा फंसा हूं। इस कार्य में रुचि रखने पर भी मुझमें उनके साथ रहने का साहस नहीं है।

पं. भानुदत्त का जन्म राजस्थान से पंजाब में जाकर बसे पुष्करण ब्राह्मण कुल के पं. बख्शीराम के परिवार में सन् 1839 में हुआ था। वे संस्कृत के अच्छे पण्डित थे तथा अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। जब पादरियों ने लाहौर में मिशन कॉलेज की स्थापना की तो वहां संस्कृत के प्राध्यापक बनाये गये। उन्होंने सनातन धर्म दीपिका, आर्य प्रश्नावली, समास्य संध्या, संस्कृत सोपान आदि अनेक ग्रन्थ लिखे तथा पंजाब के शिक्षा विभाग के लिए पाठ्य पुस्तकों का भी सम्पादन किया 'पुष्करण सज्जन चरित्र' के लेखक ने लिखा है कि सर्व साधारण की सेवा करने की भावना से पंजाब में ब्रह्म समाज तथा आर्य समाज के पहले सत् सभा की स्थापना की। जब स्वामी दयानन्द सरस्वती लाहौर पधारे तो आपने बहुत समय तक उनका सत्संग किया परन्तु धार्मिक प्रचार में सहयोग देना स्वीकार नहीं किया आदि। यह स्पष्ट है कि पं. भानुदत्त में इतना नैतिक साहस नहीं था कि वे खुलकर ऋषि दयानन्द के वैदिक सुधारवाद को अपना समर्थन देते और उनके सहायक बनते। पंजाब के शिक्षा विभाग में नौकरी कर पं. भानुदत्त ने परिवार पालन तो किया किन्तु धर्म तथा राष्ट्र जागरण में अपने समकालीन सुधारक दयानन्द का सहयोग न कर सके। 12 अक्टूबर 1913 को इनका निधन हो गया।

यह सत्य है कि पं. भानुदत्त ने स्वामी दयानन्द से क्रियात्मक सहयोग नहीं किया किन्तु विचारों से वे उनके पक्षपोषक रहे। 1881 के जनवरी मास में मथुरा के सेठ नारायण दास के आर्थिक सहयोग से जब कलकत्ता में यूनिवर्सिटी के सेनेट हॉल में स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों का विरोध करने के लिए 'आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा' का आयोजन हुआ और बिना स्वामीजी का पक्ष सुने उपस्थित पण्डितों ने अपना एकांगी मत सुनाया तथा घोषित किया -''ब्राह्मण भाग की संहिता के तुल्य मान्य है। पौराणिका देवताओं की पूजा, मृतक श्राद्ध तथा गंगादि तीर्थ सेवक वेदानुमोदित हैं, अग्निमीडे आदि मंत्रों में आया 'अग्नि', केवल भौतिक अग्नि का प्रतीक है तथा यज्ञ का प्रयोजन मात्र स्वर्ग प्राप्ति है, जलवायु का शुद्धिकरण नहीं। भारत के समाचार पत्रों ने इस घटना को विस्तार से चर्चा का विषय बनाया। पं. भानुदत्त ने भारतमित्र (कलकत्ता 10 फरवरी 1881) में इस कथित धर्म सन्दर्शिनी सभा के मनमाने व्यवहार और एकतरफा फैसला सुनाने की आलोचना की तथा कहा कि इस सभा में उपस्थित विद्वानों ने स्वामी दयानन्द का पक्ष सुने बिना ही मनमाने फतवे दिये हैं उनका कोई मूल्य नहीं है। निष्कर्ष रूप में उन्होंने लिखा-पण्डितों का कर्त्तव्य है कि वे वही करें जिससे लोक-परलोक दोनों का कल्याण हो।... दयानन्द सरस्वती के सम्मुख आकर शास्त्रार्थ कोई नहीं करता, अपने-अपने घरों में जो जी चाहे ध्रुपद गाते हैं (अर्थात् अपना एकांगी पक्ष रखते हैं)

उन्होंने अपने साथी पण्डितों को परामर्श दिया कि देशहित के लिए एकमत हो तथा हिन्दू वर्ग की एकता के लिए यत्न करें। उनकी सम्मति में स्वामी दयानन्द का भी यही लक्ष्य है। ज्ञातव्य है कि राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर तथा किशनगढ़ इन चार नगरों में पुष्करण ब्राह्मण वर्ग की मुख्य बसाबट है। शताब्दियों पूर्व इनके ही कई पूर्वज पंजाब तथा सीमान्त प्रान्त में जा बसे थे। देश विभाजन के बाद इनमें से अनेक पुन: अपने प्राचीन स्थानों में आ गये। पं. भानुदत्त इसी पुष्करण ब्राह्मण जाति के थे, इसका पता मुझे जिस ग्रन्थ 'पुष्करण सज्जन चरि.' से लगा। मैंने कई पूर्व स्वामी सर्वानन्द जी के दयानन्द मठ दीनानगर के पुस्तकालय में देखा था। वहीं से आवश्यक नोट्स लिए थे। स्वामी सर्वानन्द जी ने दयानन्द जीवन कथा सुनने के लिए मुझे दो बार मठ में आमंत्रित किया था।

प्रथम पृष्ठ का शेष

वेटिकन के सफेद कपड़ों का सच!

देखी गयी थी। ऐसा नहीं है कि इसके बाद पादरियों के दुष्ट कारनामे रुके हों! लेकिन एक आयोग का गठन जरुर किया था जो पादरियों के व्यवहार उनके चरित्र पर नजर बनाये रखेगा। उसी दौरान कार्डिनल पेल जो आस्ट्रेलिया के सबसे वरिष्ठ पादरी समेत कैथोलिक चर्च की दुनिया में भी सबसे बड़े अधिकारियों में से एक थे उन्हें यौन शोषण के मामलों में चर्च की ओर से आधिकारिक प्रतिक्रिया देने की जिम्मेदारी दी गयी थी। 2014 में पेल ने यह जिम्मेदारी सम्भालकर वैटिकन सिटी का रुख किया। यही कार्डिनल पेल अब खुद अपने ऊपर लगे यौन शोषण के आरोपों में घिर गये हैं।

वेटिकन सिटी में कुछ समय पहले ईसाईयों के सर्वोच्च धर्मगुरु पॉप जान पॉल के ''लव लेटर्स'' भी सामने आये थे जिन्होंने एक शादीशुदा अमेरिकी विचारक महिला अन्ना टेरेसा ताइमेनिका से रिश्ता रखा हुआ था। उनके बाद अब तीसरे नम्बर के अधिकारी कार्डिनल जॉर्ज पेल अपने ऊपर लगे यौन शोषण के आरोपों में घिरते दिखाई दे रहे हैं। 76 वर्षीय कार्डिनल पेल फिलहाल वेटिकन सिटी में रहते हैं और उन पर यौन शोषण के आरोप उनके ही देश आस्ट्रेलिया में लगाए गए हैं। पेल ने कहा है कि पोप ने उन्हें इन आरोपों का सामना करने के लिए छुट्टी दी है। लेकिन आस्ट्रेलिया की विक्टोरिया स्टेट पुलिस ने कहा है कि वकीलों से सलाह-मशविरे के बाद कार्डिनल पर आरोप लगाए गए हैं जोकि जायज हैं। कार्डिनल पेल को आने वाली 18 जुलाई को मेलबर्न की अदालत में पहुंचना है। इस मामले में अब तक आरोपों से जुड़ी जानकारी को सार्वजनिक नहीं किया गया है। लेकिन अगले हफ्ते एक जज कार्डिनल की पेशी से पहले जानकारी को सार्वजनिक किए जाने पर फैसला हो सकता है। उसी दिन एक बार फिर वेटिकन की पादरियों की सेना के द्वारा पहने जाने वाले सफेद कपड़ों का काला सच सामने आ जायेगा।

अधिकांश ऐसा माना जाता रहा है कि जब मनुष्य का मन भोग-विलास से भर उठता है तो वह अध्यात्म की ओर रुख करता है। उससे जुड़ता है। वह राग द्वेष मोह भोग आदि चीजों का त्यागकर एक सरल जीवन जीता है जिसके भारत देश में बहुत सारे उदहारण सुनने देखने को मिलते हैं। लेकिन यदि ईसाइयत के अन्दर चर्चों के पादरियों को झांककर देखें तो लगता है जैसे इनके जीवन का उद्देश्य पूजा, उपासना और आम जन को सही राह दिखाने के बजाय सिर्फ यौन शोषण ही मुख्य उद्देश्य रह गया हो।

दरअसल रोमन कैथोलिक चर्च का एक छोटा राज्य है जिसे वेटिकन सिटी कहते हैं। इसे ईसाइयों का मक्का भी कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। अपने धर्म (ईसाई) के प्रचार के लिए वे हर साल गरीब देशों में शिक्षा, स्वास्थ्य आदि का बहाना ले करीब 17 हजार करोड़ डॉलर खर्च करते हैं। वेटिकन के किसी भी व्यक्ति को पता नहीं है कि उनके कितने व्यापार चलते हैं। बताया जाता है कि रोम शहर में 33 प्रतिशत इलेक्ट्रॉनिक, प्लास्टिक, एयर लाइन, केमिकल और इंजीनियरिंग बिजनेस वेटिकन के शेयर हैं। इटालियन बैंकिंग में उनकी बड़ी संपत्ति है और अमेरिका एवं स्विस बैंकों में उनकी बड़ी भारी राशि जमा होने के साथ विश्व भर की मीडिया में वेटिकन का सीधा हस्तक्षेप बताया जाता रहा है। शायद इसी कारण पादरियों पर लगने वाले आरोपों उनके दुष्ट कारनामों पर अक्सर मीडिया में खामोशी छाई रहती है।

कहीं मिशनरियों के जरिये बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन को लेकर तो कहीं बच्चों का यौन शोषण को लेकर कैथोलिक चर्च अक्सर आलोचना का केंद्र रहा है। लोगों के मुताबिक इसके लिए इनके चरित्र का दोहरापन जिम्मेदार है। इसी कारण यूरोप के लोग धीरे-धीरे चर्च से निकल रहे हैं। पर दुखद बात यह कि जब यूरोप के लोग चर्च छोड़कर बाहर निकल रहे उसी समय भारत जैसे देश में बड़ी संख्या में लोग चर्च में घुस रहे हैं और खुद को राम कृष्ण की संतान की बजाय जीसस का पुत्र समझ रहे हैं। सुदर्शन न्यूज चैनल के मालिक श्री सुरेश चव्हाण की बात यहाँ सही निकलती है कि भारत की मीडिया को अधिकतर फंडिग वेटिकन सिटी जो ईसाई धर्म का बड़ा स्थान है वहाँ से आती है इसीलिए मीडिया केवल हिन्दू धर्म के साधु-संतों को बदनाम करती है और ईसाई पादरियों के दुष्कर्म को छिपाती है। बहुत पहले एक चीनी विचारक नित्शे ने कहा था कि मैं ईसाई धर्म को एक अभिशाप मानता हूँ, उसमें आंतरिक विकृति की पराकाष्ठा है। वह द्वेषभाव से भरपूर वृत्ति है। एक ऐसा भयंकर जहर जिसका का कोई ईलाज नहीं है।

- राजीव चौधरी

आर्य जनों के लिए विशेष सूचना

''सहयोग'' के लिए चाहिए आपका सहयोग

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं यही सोच कर हमने यह विचार किया और महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना का शुभारम्भ किया गया ।

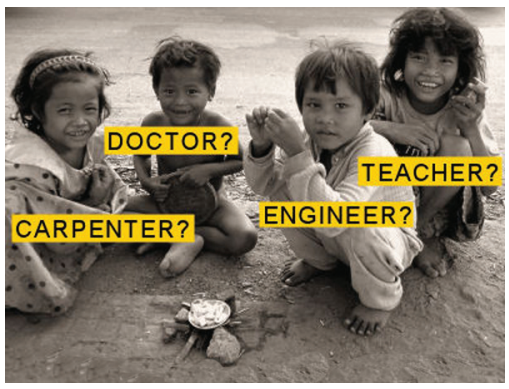

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान — **विनय आर्य**, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महाशय धर्मपाल, प्रधान — **जोगेन्द्र खट्टर**, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

विशेष निवेदन : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यह योजना अभी केवल दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों मे लागू की गई है। आप भी अपने क्षेत्रों में अपनी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क करके सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत इस योजना को आरम्भ कर सकते हैं। - *महामन्त्री*

मानव हो मानवता धारो

ईश्वर का उपकार भुलाना, ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ठीक नहीं, ठीक नहीं।।

ईश्वर ने कृपा की भारी। मानव देह हमको दी प्यारी।।
मानव होकर पाप कमाना, ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना.....

बली बनो शुभ कर्म करो तुम। दुष्कर्मों से सदा डरो तुम।।
निर्दोषों को कभी सताना, ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ...

धनी बनो, बन जाओ दानी। जग में कर दो अमर कहानी।।
धन-दौलत पा, लोभ दिखाना ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ...

विद्या पढ, विद्वान बनो तुम। मानवता की शान बनो तुम।।
विद्या पाकर ज्ञान छुपाना ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ...

बनो सज्जनों, परोपकारी। राम कृष्ण जैसे बलधारी।।
दुष्टजनों का साथ निभाना ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ...

बनो तपस्वी सच्चे त्यागी। दयानन्द ऋषिसे वैरागी।।
ज्ञानी बन पाखंड, बढ़ाना ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ...

अर्जुन जैसे वीर बनो तुम। वीर शिवा हम्मीर बनो तुम।।
कभी मुसीबत में घबराना ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ...

ईश्वर भक्त महान बनो तुम। देश भक्त गुणवान बनो तुम।।
विकलांगों की हंसी उड़ाना ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ...

मानव हो, मानवता धारो। काम, क्रोध, मदलोभ बिसारो।।
सत्संग में, रोड़ा अटकाना, ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ...

'नन्दलाल निर्भय' अब जागो। द्वेष ईर्ष्या घृणा त्यागो।
गन्दे गीत बनाना और गाना, ठीक नहीं, ठीक नहीं।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाना, ...

-पं. नन्दलाल 'निर्भय'
ग्रा.+पो. बहीन, जिला-पलवल (हरि.)

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।
-सम्पादक

Veda Prarthana

Work Hard to Gain Prosperity but Do Not Hurt Others in the Process

- Acharya Gyaneshwarya

मास्रेधत सोमिनो दक्षतामहे कृणुध्वं राय आतुजे। तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवत्नवे।।

Ma sredhat somino dakshata mahe krnudhvam raya atuje. Taranirijjayati ksheti pushyati na devasah kavatnawe. (*Rig Veda* 7:32:9)

Somino if you want to acquire prosperity and benevolence in life, ***mahe raya*** great amount of material wealth, atuje health and strength in life, dakshata krnudhvam work hard to become worthy of accomplishing your goals, ma sredhat but in the process of accomplishing your goals you may never hurt others. Devasah people with virtuous divine qualities jayati achieve success in life taranih it like an easily flowing boat, ksheti they themselves grow and help nurture others, pushyati they blossom and progress in life, na kavatnawe their life and wealth is never used for bad purposes.

All thoughtful human beings by their innate nature desire prosperity and sucess in their lives. To fulfill these desires people want wealth, good health, education and learning, happiness, social recognition and fame. Having sufficient wealth can make accomplishing some of these goals easier. Vedas encourage us to earn as much wealth as possible but by honest means and once earned we should share our wealth for vrtuous causes and with those who are less fortunate in the society. Vedic teachings state that from early childhood we should be taught to develop virtuous habits such as following dharma, acquiring spiritual and secular knowledge, developing physical strength, building outstanding character, and remaining celibate until marriage, whereby we develop good sanskars (root mental impressions, inclinations, and memories for the future) before we start earning weath. Our methods to earn and acquire great amount of welth throughout our life must remain honest.

God directs us through the messages of Veda mantras: Human beings to acquire wealth, do not use means that are sinful, deceitful or use violence. In contrast to this satatement, however, at present in many countries it is a common practice for many persons including the so called 'leaders' to gather wealth through deceit, lies, fraud, bribes and similar sinful means so that they may fulfill their physical desires as well as acquire fame and social status.

One certainly may succeed in gathering wealth through deceit, lies, fraus, bribes, looting etc. as well as find temporary happiness by enjoying various luxuries items acquired by that wealth. However, wealth acquired by ill means does not provide mental peace and contentment; willpower and confidence; fearlessness and bravery; or the soul acquiring joy and bliss. Instead, ill gotten wealth leads to lack of mental peace, restlessness, doubt, shame, fear and in the long term unhappiness. Therefore, as directed in the Vedas we should first acquire spiritual and secular knowledge, develop courage, strength, virtuous habits and skills and then based on them we should earn our wealth by honest means and as guided by other dharma principles.

Dear God, people who earn their wealth by honest means and following dharma principles, with their wealth they not only nurture themselves and their families, but also become partners in the progress and prosperity of others in their community. They are especially helpful to the illiterate, ignorant and down-trodden persons. They try to decrease the misery of the down-trodden and increase their fulfillment like an easily flowing boat helps people cross the river from one river-bank to the other. Such generous and virtuous persons in the long run earn fame, respect and honor in the society and are fondly remembered for generations (thousands of years) by the society and nations for their virtues.

The Vedas remind even those persons who have earned their wealth by honest means, are virtuous and generous in life that they must always remain alert so they may not slide in backwards in their integrity or honesty as wealth often brings arrogance and corruption. Those persons who are not resolute in integrity, truthful, honest, disciplined or generous, such persons with the intoxication of wealth often become lazy, negligent, reckless, indulgent in sensual pleasures, arrogant etc. Once a person is inflicted with such vices his/her physical strength diminishes, will power becomes feeble, life looses luster and finally life- span becomes shortened. Such person's instead of gaining true fame, actually gains ill-fame, dishonor and distrust of public at large. The life instead of being fulfilled, joyful and peaceful becomes full of misery and a living hell.

In summary, Vedas state that before you earn and/or acquire a lot of wealth become deserving of it. We should first develop virtuous habits as well as acquire both spiritual and secular knowledge. Based on them we should earn our wealth by honest means and as guided by other dharma principles. We should then spend the wealth for our and our family's nurture as well as generously promoting virtuous causes in the community. Also, never let your wealth be misused for sinful or non-virtuous pursuits. Dear God, please bless us and inspire us that we follow Your path and guidance and thus acquire prosperity and progress in life.

(For explanations of prosperity in the Vedas also see mantra # 3,4,17 and 21)

To be continued

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 26 (ब)

गतांक से आगे....

संस्कृतं सर्वेषां संस्कृतं सर्वत्र

शब्दान् जानीमहे वाक्यप्रयोगञ्च कुर्महे

गृहम्।
भवनम्।
सूर्योदयः।
सूर्यास्तः।
सेतुः।
उडुपः (small boat) नौका
गगनयानम्/विमानम्।
भारवाहनम्।
भारतध्वजः।
1. एकम्।
2. द्वे।
3. त्रीणि।
4. चत्वारि।
5. पञ्च।
6. षट्।
7. सप्त।
8. अष्ट/अष्टौ।
9. नव।
10. दश।
20 विंशतिः।
30 त्रिंशत्।
40 चत्त्वारिंशत्।
50 पञ्चिशत्।

60 षष्टिः।
70 सप्ततिः।
80 अशीतिः।
90 नवतिः।
100 शतम्।
वामतः।
➔ दक्षिणतः।
↑ उपरि।
↓अधः।
चलच्चित्र ग्राहकम्।
नल्लिका।
जलशीतकम्।
यानपेटिका।
तरङ्ग सूचकम् (तरङ्गाः)
+ सङ्कलनम्।
- व्यवकलनम्।
× गुणाकारः।
÷ भागाकारः।
% प्रतिशतम्।
@ अत्र (विलासम्)।
श्वेतः।
नीलः।

रक्तः।
कृष्णः।
इदानीं वाक्यप्रयोगं
कुर्मः .....
संस्कृतेन सम्भाषणं
कुर्मः .....
जीवनस्य परिवर्तनं
कुर्मः .....
पुष्पनाम संस्कृतम्
१ कनेर कर्णिकार
२ कमल (नीला) इन्दीवरम्
३ कमल (श्वेत) कैरवम्
४ कमल (लाल) कोकनदम्, पद्मम्
५ कुमुदनी कुमुदम्
६ कुन्द कुन्दम्
७ केवड़ा केतकी
८ गुलाब पाटलम्

९ गेंदा स्थलपद्म्
१० चम्पा चम्पकः
११ चमेली
१२ जवापुष्प जपापुष्पम्
१३ जूही यूथिका
१४ दुपहरिया बन्धूकः
१५ नेवारी नवमालिका
१६ बेला मल्लिका
१७ मौलसरी बकुलः
१८ रातरानी रजनीगन्धा
१९ हरसिंगार शेफालिका
२० मालती मालतीपुष्पा

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

एक विस्मृत साहित्यकार

बाबू बच्चाराम चैटर्जी आर्यसमाज के आदिकाल के एक प्रमुख व्यक्ति थे। तब बंगालियों में राष्ट्रीय भावना तथा स्वधर्मभाव बहुत कम था। सब पढ़े-लिखे बंगाली अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव में पश्चिमी रंग में रंगे हुए थे। बाबू बच्चाराम कैसे आर्य बने, यह तो हमें पता नहीं, परन्तु आपने सक्खर (सिन्धप्रदेश) तथा पंजाब में रहते हुए वैदिक धर्म के प्रसार का बड़ा ठोस कार्य किया। जब आप बंगाल जाते थे तो वहाँ भी आर्यसमाज का सन्देश सुनाया करते थे।

आपने मूर्त्ति-पूजा, शाकाहार, पुराण, शिष्टाचार आदि विषयों पर कई पुस्तकें छपवाईं। कुछ जीवनियाँ भी छपवाईं। तब आपका साहित्य पढ़ा जाता था।

आप अच्छे लोकप्रिय वक्ता थे। भाषा गंगा-जमनी थी। शैली रोचक थी। हँसाते भी थे। ग्रामीण भी आपकी बातें समझ लेते थे। एक बार उन्हें बहुत कह-सुनकर भागोवाल जिला गुरदासपुर के समाज के उत्सव पर ले-जाया गया। एक बार अमृतसर में अन्धविश्वास के खण्डन में शनिवार को तेल माँगनेवाले एक डकोत की कहानी सुनाई। कहीं डकोतजी ने तेल माँगा। देनेवाले ने मिट्टी का तेल दिया। डकोत ने मिट्टी का तेल लेने से इन्कार कर दिया।

देनेवाले ने कहा, ''क्या शनि देवता को मिट्टी का तेल काटता है?'' बाबू बच्चाराम चटर्जी ने यह घटना अपने ऐसे अनूठे ढंग से सुनाई कि श्रोताओं की हँसी रोके न रुकी।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

विश्व वेद सम्मेलन का आयोजन

आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी में 24 अप्रैल को आयोजित आर्य विद्वानों की बैठक में निर्णय लिय गया कि आर्य समाज की वैदिक विचारधारा को विश्व पटल पर प्रतिष्ठापित करने हेतु विश्व वेद सम्मेलन का भव्य एवं प्रभावी रूप से आयोजन किया जाये।

अभी तक वेदों को प्राय: धार्मिक कर्मकाण्ड से ही जोड़कर देखा जाता है जिससे उसकी सामाजिक उपयोगिता पर जन साधारण का ध्यान नहीं जाता है। उधर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व शांति एवं विकास के लिए यू.एन.ओ. का गठन हुआ और 1948 में मानव अधिकार का घोषणा पत्र जारी हुआ। यह बहुत कुछ वेद की मान्यताओं पर आधारित है। यूनेस्को ने ऋग्वेद को विश्व मानवता की प्राचीनतम धरोहर के रूप में स्वीकार किया। भारत के प्रधानमंत्री के रूप में स्व. इन्दिरा गांधी से लेकर श्री नरेन्द्र मोदी ने यू.एन.ओ. के पटल पर वेदों का सन्दर्भ दिया। अब उसी यू. एन. ओ ने विश्व की 193 राष्ट्र राज्यों को 17 चुनौतियों-गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अशिक्षा, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक विषमता, जाति, लिंग, मत, पंथ व क्षेत्रियता आधारित भेदभाव आदि को 2016 से शुरू कर 2030 तक पूरा करने का संकल्प पारित किया है। पेरिस में जलवायु संकट से उबरने के लिये 190 देशों ने इसी तरह का फैसला लिया है। विश्व वेद सम्मेलन इन सभी मुद्दों पर गम्भीर विचार विमर्श-संगोष्ठी आयोजित कर अपना वैदिक घोषणा पत्र जारी करेगा। यह सम्मेलन दिनांक 15, 16 व 17 दिसम्बर 2017 को नई दिल्ली में होना प्रस्तावित है तथा इसे एक अभिनव रूप में आयोजित किया जायेगा।

- आनन्द कुमार, संयोजक

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

जहांगीरपुरी में आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि क्रय एवं लघु भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

भुगतान की अन्तिम तिथि 24 जुलाई, 2017

आर्यसमाजें, आर्य संस्थाएं एवं दानी महानुभाव अपना सहयोग यथाशीघ्र भिजवाकर पुण्य के भागी बनें

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि दिल्ली के जहांगीरपुरी क्षेत्र में आर्यसमाज मन्दिर के भवन निर्माण के लिए भूमि क्रय कर ली गई है जिसके मूल्य भुगतान के लिए 90 दिन का समय लिया गया है। भुगतान की अन्तिम तिथि 24 जुलाई, 2017 निर्धारित की गई है, जिसे अब मात्र 19 दिन ही शेष हैं।

विदित हो कि दिल्ली के झुग्गी-झोपड़ी कालोनी - जहांगीरपुरी में आर्य समाज की गतिविधियां विगत 40 वर्षों से संचालित की जा रही थीं किन्तु मन्दिर निर्माण के लिए भूमि खरीदी नहीं जा सकी थी। अब आर्यसमाज एवं सभा के सहयोग से भूमि खरीद ली गई है और इस पर लघु मन्दिर निर्माण कार्य आरम्भ किया जाना है।

इस हेतु समस्त आर्यसमाजों, दानी महानुभावों, सहयोगी संस्थानों, संगठनों से सहयोग सादर अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक धनराशि का सहयोग नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर सभा कार्यालय - **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1** के पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप चाहें तो अपनी दानराशि सीधे सभा के निम्न बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

कृपया राशि जमा करते ही श्री मनोज नेगी जी 9540040388 को सूचित करें तथा अपनी जमा पर्ची aryasabha@yahoo.com पर ईमेल कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

भारतीय स्टेट बैंक
खाता सं. 33723192049
IFSC : SBIN0001639

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य	**विनय आर्य**
प्रधान	**महामन्त्री**
9810061763	**9958174441**

वृष्टि यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज कोटा द्वारा 26 जून को वृष्टि यज्ञ का आयोजन रंगबाड़ी स्थित मधुस्मृति संस्थान में किया गया जिसमें सभा की ओर से विश्वशांति एवं मानवमात्र के कल्याण के लिए प्रार्थना की गई। यज्ञ आचार्य अग्निमित्र शास्त्री एवं पं. शोभाराम आर्य धर्मशिक्षक डीएवी कोटा के ब्रह्मत्व में किया गया। यजमान बृजबाला एवं हरगोविन्द निर्भीक के साथ यज्ञ में चारों वेद से चयनित वृष्टि सम्बन्धी विशेष मंत्रों से निराश्रित बालक-बालिकाओं एवं आर्य समाज के सदस्यों द्वारा विशेष आहुतियां दी गई। *-अर्जुन देव चद्दा, प्रधान*

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज पंखा रोड
सी-3, जनकपुरी, नई दिल्ली

प्रधान	-	श्री शिव कुमार मदान
मन्त्री	-	श्री रमेश चन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री भूप सिंह सैनी

आर्य समाज कृष्ण नगर
दिल्ली-51

प्रधान	-	श्री यशपाल शर्मा
मन्त्री	-	श्री विजय भाटिया
कोषाध्यक्ष	-	श्री विजय बजाज

प्रवेश प्रारम्भ

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ गुजरात के 'संस्कृत व्याकरण, उपनिषद् एवं दर्शन अध्यापन केन्द्र' में ब्रह्मचारियों का प्रवेश प्रारम्भ। आचार्य शक्तिनन्दन जी के सान्निध्य में अष्टाध्यायी, प्रथमावृत्ति तथा धातुवृत्ति का अध्यापन कराया जाता है। अष्टाध्यायी के साथ संस्कृत भाषा का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। आश्रम में आवास, भोजन, वस्त्र, पुस्तक आदि समस्त साधन पूर्णत: नि:शुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं। गुरुकुलीय दिनचर्या पूर्ण अनुशासन, योगाभ्यास व अध्यात्म में रुचि रखने वाले ब्रह्मचारी ही प्रवेश के लिए सम्पर्क करें। *- व्यवस्थापक*

मो. 9427059550, 9408568391

आर्यरत्न देव नारायण भारद्वाज वैदिक विद्वान से सम्मानित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्ती समिति द्वारा जयपुर (राज.) में आयोजित महात्मा हंसराज जयन्ती पर अध्यक्ष पद्म श्री पूनम सूरी द्वारा आर्य रत्न देव नारायण भारद्वाज को वैदिक विद्वान स्वरूप सम्मानित किया गया, जिसे उन्होंने अलीगढ़ में सम्पन्न समारोह के मध्य अपने शुभचिन्तक स्नेही, श्रोताओं, पाठकों एवं सम्पादकों को समर्पित कर कृतज्ञता ज्ञापित की।

- श्रीमती दर्शन देवी, प्रधाना

सिलाई केन्द्र की स्थापना

आर्य समाज चौरा माजरा घरौंडा करनाल में निर्धन बालिकाओं व महिलाओं के लिए आर्य महिला सिलाई केन्द्र का उद्घाटन आर्य समाज चौरा के संरक्षक श्री प्रज्ञान मुनि जी द्वारा किया गया। यह गांव 7 गांवों के मध्य स्थित है। प्रधान श्री धर्मदेव खुराना के प्रयासों से यहां पर सिलाई केन्द्र की स्थापना की गई और यह भी सुनिश्चित किया गया कि हर माह के अंतिम रविवार को यहां पर सिलाई केंन्द्र के लिए यज्ञ का आयोजन किया जाएगा जिसमें बालिकाओं व महिलाओं को यज्ञ सत्संग द्वारा जोड़ा जाएगा व उन्हें वेदों का ज्ञान भी दिया जाएगा। बालिकाओं को नि:शुल्क सिलाई सिखाई जाएगी जिसमें पहले सप्ताह में 25 बालिकाएं व महिलाएं प्रवेश ले चुकी हैं। कार्यकर्ता श्री संदीप कुमार उपाध्याय ने बताया कि आर्य समाज प्रत्येक वर्ष गांव में बुद्धिमान बालकों का चयन कर उन्हें विभिन्न गुरुकुलों में प्रवेश दिलाता है। *-मन्त्री*

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरन्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक अपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - *सम्पादक*

सोमवार 3 जुलाई, 2017 से रविवार 9 जुलाई, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 6/7 जुलाई, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 5 जुलाई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह